

॥ हारिर्दिल्ले श्या ये न विसावा प्रा
॥ इंभ ॥ प न सुमो रा वी ये या सुमो र



(2)

श्री गणेशाय नमः ॥ जय जय श्री ^ठ ह्यस्य आत्मायारामा ॥ उपा
धी रहित पुर्ण ब्रह्मा ॥ मंगळरुपामंगंधामा ॥ पुणकामा सर्व
शा ॥ १ ॥ अमंगळहे माही काया ॥ मंगळ नाम तु से ये दुराया ॥
ते नाममा से हृदई लीहनीया ॥ तु स्यामी याप वित्र करी ॥
॥ २ ॥ जैसा का गद खर गटा जाण ॥ यासन सी व तिसो वळे
ब्राह्मण ॥ या वरितु से ना मक गाले खण ॥ मंगपु जो न हृदई
परिति ॥ ३ ॥ तैसे हे अमंगळ गरीर ॥ शुक्ल श्रोणी त अ पवी
त्र ॥ अस्ती मांस मळ मुत्रा यण ची करुणी भरले से ॥ ४ ॥ जन
त जन्मी च्या पापे चोळीले ॥ काम क्रोध लोभे खर करले ॥ श्लेष्म
दुगंधीचे बोतले ॥ कीमीचे भरले सदने ॥ ५ ॥ केवळ अ
स्तिची मोळी ॥ सीराणे टा पिट पिबां चली ॥ मांस खे

पीली ॥ साव रिमाउनी वचेचि ॥ ६ ॥ जो रज स्वके चं बीटाळ ॥
(3) सर्वा माली जमंगळ ॥ या विटाळचे फळ ॥ वाटले केवळ मळ
मुत्रि ॥ ७ ॥ जैसे हे जमंगळ पाहिजे रीतुझे नामली हि सी हृद
श ॥ मग या येवटे पवीरना हि ॥ नुझे भजणी ला विटा ॥ ८ ॥ ज्या
वरी मुद्रा करि राजेंद्र ॥ तें पथी ती वंये होये पत्र नै सामाझे
हृदई तुंया दवेद्रा ॥ राहाणें करिकां ॥ ९ ॥ कागद उतायें न
मोळें हिना ॥ परि मुद्रा उमट नाव दि विजण ॥ नै सामी जसु नदि
न ॥ करि पावन येदु विरा ॥ १० ॥ नुक्क माळे संगे नें न ॥ कठिद्याली
ती भाग्यवंत ॥ किं सुमना संगे मोळ चढत ॥ तैलास जैसे वीसेध
पै ॥ ११ ॥ राजा बैसी जे सांकासनी ॥ तो नमस्कारि जे थो रलास

नी॥ मा सितनुचक्रपाणी॥ करि पावणतै सीची॥ १२॥ ब्रह्मानंदा
येदुकुळटिळका॥ मीतुझ्यापाईच्यापादुका॥ परियावंद्यसकळि
का॥ चरणप्रसादेतुसीया॥ १३॥ जोसो जेदंरावा जोध्यासंपतां॥
मथुरेसमिपकमको द्रवपीता॥ उपवनीराहिलातनुना॥ नंदगे
कीयासमवेत॥ १४॥ यावधिलाकुश्चालीलतेथुना॥ प्रवेश
लाहोराजभुवण॥ कंसराधासंकरणनमन॥ वर्तमानसांगीतला
॥ १५॥ ह्मणेघेउणजालाजोबज्जोबना॥ जोयादवकुळमुगुटर
ला॥ जोकांनरवीरपंच्यानना॥ वीद्वजनवंदितितया॥ १६॥ जो
त्रीभुवनवंद्यसर्वासजायी॥ जोजेजेजितजेदुतवीर्यी॥ पर

(3A)

मते जं स्त्री प्रती स्तयतिो ये दु वीर्य आणीला ॥ १७ ॥ तमारि कंद्ये
 च्या हं यय जळि ॥ जेणे काकी यार गडि ला पायांत की ॥ जेणे
 क्षणे पुतना शोखीली ॥ नो वन माकी आणीला ॥ १८ ॥ त्रणावती
 के शि जग बग ॥ प्रलंब धे तु कर धी ला सवे ग ॥ जो निज भ
 क हं दया र विंद भं ग ॥ नो श्री र ग आणीला ॥ १९ ॥ जो कमळ
 भ कमळ पत्रा ॥ क्षप द्यो द्द्र व जाणा वीर पाक्ष ॥ ज्या सी ध्यां ति तो स
 र्व साक्ष ॥ परम पुरुष आणीला ॥ २० ॥ आला जो कुंण श्री द्द्र ह ॥ दच
 कलं कं साचं अंतःकरण ॥ बुधी ची त आ हं कार मं ण ॥ द्द्र ह स प
 जा हा ला ॥ २१ ॥ कं सा सी ला गले ह र्शि य पि से ॥ प दार्थ मा त्र ह री

ने

(५)

ना

हा रित्तप दिसे ॥ आ पले जांन रिं ह्छं भास्ये ॥ हा क आ वे शे फो
प डि ली ॥ २२ ॥ ह्छं ह्छं आ स न व स न ॥ ह्छं रूप दी से भू ष ण ॥
भो व ते से व क त्व जं न ॥ दि स दी भी ह्छं रूप ते ॥ २३ ॥ स्ना न करा
व या कं स ॥ प उ द णी ये तां दे से स र्वे ॥ उ द की दी से ह्छी के हा
जा ले मान स हा रि त्त प ॥ २४ ॥ वा व या बै स ला ङ नं ॥ तों वा
जा न्नां त दी से मन मो ह न ॥ कं स हा क फो डि ली दा र ण ॥ मु छी व
कु ण बो ल त से ॥ २५ ॥ ब हु त भो गी सी पुरु षा र्थ ॥ सो सी ये व टा मु छी
घा त ॥ आ वे शे भो जं न पा त्र फो डि ता ॥ अ न्नं वि ख र त च हुं क डो
॥ २६ ॥ रा गें कं स फी र वी न य ण ॥ ह्छे ण पा क क स सि जी वें मा रि ण ॥

(६९)



ॐ नमो मातृ मेळुण हृदयं ॥ माझा प्राण येवो पाहासी ॥ २७ ॥
प्राणनां सजाणीले उदक ॥ तो उदकी दिसे कमळा नायक ॥ कं
हो पात्र भिरका वीले देखा ॥ हाक फोडून ते धवां ॥ २४ ॥ हउ पिदेत विउ
या करणी ॥ कंस पाहे विडि उरु लुनि ॥ हंणे जात मेळ वीलाच
कपाणी ॥ तुमचे मणी म्या मरु ॥ २२ ॥ पुटे दाविले दर्पण ॥
जात बिबलाना रायण ॥ तसा दिधला भीरका उण ॥ सेव
क ॥ जनहासति ॥ ३० ॥ पापवेदे साच मा ॥ हंणे जवयेचे हे दावे
दास जाणीवे गं हास्य ॥ तो हास्य श्रीधर रूप दिसे ॥ ३१ ॥ हास्य
भीरका विले धाके ॥ हंणे कोटे माझे पाटी राखे ॥ मुदिकचा

(5)



ॐ

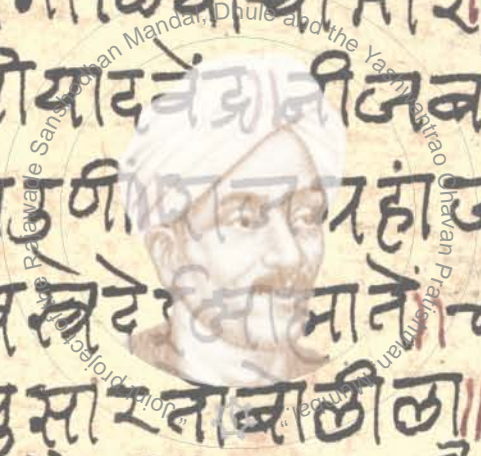
पुरादिकसखे ॥ कोटे गेले कळेना ॥ ३२ ॥ ॐ ना पुरा मा जी प्रवे
 शला ॥ तो आनं तरुप स्त्रीयांचा मेळा ॥ हा कफे हुन बाहेर आ
 ला ॥ धा विरळ पकतसे ॥ ३३ ॥ पुं जा पजन कळनि कनीरा
 क ॥ अवधा व्यापी लघन नीक ॥ पद्यार्थ मात्र सकळ दिस ति
 गोपाक स्वरुपे ॥ ३४ ॥ त्रे स्वयं सदे श क रूण ॥ कं सा सला
 गले हृष्यां ध्या ना ॥ ३५ ॥ से वि क उ प जी ज ग जी व ण ॥ का य
 करि ना जा हा ला ॥ ३५ ॥ ये क र म जी ते धे र ज णी ॥ स वं च उ ग
 ॐ व ला वा स र म णी ॥ नी स ने म सा रि ला ते क्ष णी ॥ न द
 दि कीं ते ध वां ॥ ३६ ॥ ह म स्ये दृ टं धा त ली मा ल ग ठि ॥ प द क
 प द क मु क्त हं र स क वि कं टि ॥ दि व्य रू ले श क क ति मु ग धी

(5A)

व

बाहुवशीभुशणे ॥३७॥ वीरकंकणेमनेंठी ॥ दशांगोळिमुंठी
 काचिदाठि ॥ बकिरामासहितजगज्येठी ॥ रथावरिजा
 रुठला ॥३८॥ मागेगौकियाचाभारालागलावाद्याचाग
 जरा ॥ मथुरेमाजीयादवेद्रीनीजबळेसिंप्रवेहाला ॥३९॥
 तोरजकवश्रेष्ठुणी ॥ यानगरहांजातद्येउणी ॥ यास
 ह्मणेमोक्षदाणी ॥ वस्त्रदेवतामार्ते ॥४०॥ तोसाचाभूयज
 वकिजालातदनुसारतावालीला ॥ ह्मणेवस्त्रंकायसी
 रातुजला ॥ गोरसचौगौकीया ॥४१॥ तुंनामध्येगोवळसि ॥
 बळकटपणेसोबिद्येसी ॥ तेथेथेनचलेमथुरेसि ॥

(6)



(6A)

जीवे जासि माझ्या हाथें ॥ ७॥ शत्रुवांजान्याय बहुत केले ॥ १॥
 ण उण कंस राये ॥ आनविले ॥ जैसें जैकता गोपाके ॥ नवल
 केले तेथेचि ॥ ७॥ कवळ्या लुनिनी जवळें ॥ राजकाचेसी
 रखे दिले ॥ जैसें नरविद खुडिलें ॥ नखा ग्रीच उवळीके ॥ ७॥
 वस्त्रेचे उण समळी ॥ गोकीया वाठित छुछुनांथ ॥ तो वाठेसि
 सीपी भेठत ॥ तंतुवा नाम तयाचे ॥ ७॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥
 ते वेळें ॥ भावे पुजी लेखन सावळी ॥ तो कुबी जा कंस दसी
 ते वेळें ॥ दिशं चंदन भरुण कचोळी ॥ वाटे सजाता देखेच
 न सावळी ॥ कावळ पुतळा मदनाचा ॥ ७॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥
 नदादि नदयाका ॥ मरणा करि मज वरि ॥ ७॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥

वीदृपदिसेबापुडि॥ कुरुपसवंगीवाकुडि॥ परिस्तरिस्तरि
 तिणेगोडि॥ नीजभावेसीधरीलीसे॥ ४५॥ हेचिरामावतारि
 चिमथुराकैकैचिदासीदेहीरघुवीरारामेभ्रापिलीसान
 वेश्वरा॥ वक्रहोयसवंगी॥ ४६॥ मगतेलगळीरामचरणी
 ह्मणेवरदेईचापणी॥ रामह्मणेपुढेकंससदनि॥ दासिहो
 सीकुरुपतुं॥ ५०॥ मीकंसवधाथमिथुरेसीयेइण॥ नेद्वानुज
 वाठेउधरिण॥ असोनीसह्मणेजगज्जीवंन॥ चंदनदेई
 जाह्माते॥ ५१॥ तोतेकुचिजाभावाथे॥ चंदनळवीजास
 ह्मणे॥ आवळोकिताहारिमुखाने॥ सद्गदचीतेजाहाली॥ ५२॥

(७)

स

श्रीजांगीचर्चुनीयांचंदनाकेलेहरिससाद्यंगनमनः॥
 हृद्योदिसहस्रीं धरुणलावीलाचरणशरिरा॥५३॥ जैसा
 परिसरगटवांलोहाते॥ वकाकसुवर्णहोयेतेथे॥ तैसीपावलि
 दिव्यशरिराते॥ जापांगपातेहरिच्या॥५४॥ कीउगवतावासय
 मणी॥ अंधःकारपळेसुळिहनी॥ कीछंछं चंद्रउगवतातेकु
 मोदिनी॥ वीकासलिनेजतेजा॥५५॥ जैस्यारंभाउवशीवीला
 सिणी॥ तैसीचकुबिजादिव्यपद्मीणी॥ हरिमुखन्याहाकी
 नयणी॥ मंजुकवचनीबोळता॥ धमीनकेवनमनमोह
 नमेधनामा॥ हिमनगज्यामातामनवीशामा॥ चालआ
 तामाश्रियानिंजधामा॥ पुर्णकामासर्वेशा॥५७॥ हरिहृणे
 कंसवधुनमगमीपाहिंनतुझेसदना॥ जैसेबोळतानंदनंदन

कुबी जा गे ली नी ज ग्रहा ॥ ५ ॥ तो फुल्लारि जों ते वे क क्षेणे हरी कं
 ठी घात ल्या माळा ॥ आवडी न मी न पदक मळा ॥ मिं लि द जै सा प्री ती ने
 ॥ ५९ ॥ हि पु से लो का स वा ठो ध नु य गि द वा को ठो ॥ सो जा धी वी लो कु
 म ग ने ठो ॥ जा उ कं स म द विय ॥ ६० ॥ गा व त प्र वे ष ल शी प ति गो
 पि म थु रे च्या श्र व णी जै क ति स नु द हो उ न धा व ती ॥ ये दु प ति रा स
 व या ॥ ६१ ॥ की ते का जे वि त हो सा न शी ॥ ते सा च क व क क रि वे गी
 धा व ति सुं द रि ॥ पु त ना पा हा व या ॥ ६२ ॥ ये कि स्या न ग्न त्त त ॥ के श र
 क ल्पु रि मी श्री त ॥ चो ख णी सी री वा सी त ॥ ते सि च धा व त ग ज गाम
 ना ॥ ६३ ॥ ये की गो पी जो कां उ त ॥ उ ध र्गै लो मु स का स हि त हा हा ॥ का
 मि नि जै क ता चि मा त धा वे व रि त ते सि ची ॥ ६४ ॥ ये द की हो ती त

(8)

र

ॐ

(8A)

सुंदर ॥ काणी जैको बालाये दुवी रा ॥ साहुन वाघ्य चरघ रा ॥ जाय
 श्रीवर पाहा वया ॥ ६५ ॥ भुलवी लाहू छो वेधके ॥ पायि द्यात ली
 कर्णताटके ॥ चरणी चि भुषणे सुरेखे ॥ कणीय की व्यालितो ॥ ६६ ॥
 जानं वठ जो उ विषो ला ॥ काणी बा बले येक सरो ॥ कंठी बा चली
 ने पुये ॥ वाळे पै जन सम द्या ॥ ६७ ॥ मिस फुल चंद्र बिज वरा ॥ गुठ
 गां बांध ति सुंदरा ॥ धो सु बावी या पर कर ॥ चरण गुं छि गो विति ॥ ६८ ॥
 मोतिया चि दिव्य बौ जाळि ॥ ६९ ॥ सतयक वेळ्हाळि ॥ ना किचे मोति चर
 ण केळि ॥ धो छिया ज वळि बांधि ति ॥ ७० ॥ पेक का जळ सु विंधाळि ता ॥
 कुकुं जोळ यामा जी लेत ॥ जो उ वे मुखा सिमां खी ता ॥ हरि दाल वित ॥ पा
 या सी ॥ ७१ ॥ कपु रें सुपारी द्योळि ली ॥ ये की ने कणी मा जी द्यात ली ॥ वेणी
 सवी डियात लाळी ॥ ये कि खो विति वुरेण ॥ ७२ ॥ येक लघं गी लेत

म

कंचुकि सुकृहारबाधेमस्तानिनेसते वस्त्रहस्तानि धावेये किचे
 उणिया ॥ ७२ ॥ वाककेठेउनसीक्यावरीकडियेचेनलिघागरियेक
 शडचक्राचेमाडियेवरिनेथुनरुलक्षिता ॥ ७३ ॥ येकिभक्तीच्याचौ
 वारां ॥ ७४ ॥ अहिल्यासुंदरी ॥ येकीसाधनाच्यामंदिरावरिचढेवेक
 कि ॥ ७५ ॥ येकध्यानाचेगवाभदरासावाटेउक्षीतियेदुविराये
 कलयेलाक्षाचेजाळांधरासावुनपाहेजगदात्मा ॥ ७६ ॥ क्षनयेक
 आयुशजाणुनजाउलादिबगेकाविप्रेमाचिगोडिवरिचढतां
 नांतडि ॥ पाहेव्यावजीहारिता ॥ ७७ ॥ ठाईठाईगोपीचेभारावर्षती
 तिसुमनाचेसंभारायेकीरत्नदीपद्येउणसुंदरावोवाळितीपुरा
 णपुरुषा ॥ ७८ ॥ मदनमनोहरमेद्यशामादेखतागोपीसीथोर
 संभ्रमायेकसंणतिकोटिकामावोवाळावेयावरुणी ॥ ७९ ॥ येकीह

(9)

ॐ श्रीसुखावरुण ॥ स ध्ये जा वं वो कुन ॥ ये की कामे विकृष्ण पुण हि रि
 वदन वौल किवां ॥ आ सो धनु र्गि म उ पा स मी प ॥ आ ला च तु रा स्या
 चा बा प ॥ जो मा या नि यं ता ची ल्य रू प ॥ क र्म मो च क मो क्ष या ता ॥ ८० ॥ तो कं
 श्रे कु टि के के ले बं उ ॥ लो रु ध नु र्ग्य ट वी ले प्र च उ ॥ जै से पू वी त्री व
 क को दं ड सी ता व ल भ भ शी ले ॥ ८१ ॥ तै से ची ग जा स्य ता त मी त्रे ॥
 आ क ण वि ठु न कं जं ने त्रे ॥ लो रु ध नु र्ग्य मो डु न क्ष ण मा त्रे ॥ दो णी रू
 क ले के ली पै ॥ ८२ ॥ ते थे हो ते दे स रू रू क ॥ मा रु उ न्म त म द्य प्रा श क
 प र म दु र्म ति पी सी त भ क्ष क ॥ स ह स्त्रे क धां वि ले ॥ ८३ ॥ रा ज आ शं
 म वे तां गो व के ॥ ब के लो रु चा प मो डी ले ॥ ह नौ नि भ व वे च लो ट ले ॥ रा म
 ह म ष्ठां व रि पै ॥ ८४ ॥ जै से दे खो नी रा म व न मा की ॥ को रु र खो उ हा ती

(9A)

पं



(१०)

हातिव्येतली दोधे उठि ले प्रताप बळी ॥ को न आ क कि त या ते ॥ ८५ ॥ डे
 से उजा जाचे उभे जस ती भा र ॥ नीः शंक उ ठ ति दो धे व्या द्य ॥ की दे खो
 णी वार ण चक्र ॥ जै से मगे द्य च पे ट ति ॥ ८६ ॥ पु वी नी रा को दू व कुं म र ॥
 दे खो नि पि सि ता शी ता श ना चे भा र ॥ धां वं ले जै से प्र क य र द्य तै से
 दो धे उ ठ ति ॥ ८७ ॥ र ण भे र व रो वे वा ण ॥ दो धे च नु ष्प र वं डे वे उ णः
 पा डि ले दै सु स मु क र्णे दु न ॥ ग त या ण स र्व जाले ॥ ८८ ॥ स मा चा र क
 क्क ठा कं सा श या ग मे डु न ॥ जे दे सा ती पर दु न गे ले मा गु ते डु
 उप व ना रा हा व या ॥ ८९ ॥ कु उ मं ड प वि चं सी ला ॥ र क्ष का चा सं क्कार
 के ला ॥ र ज क कौ की या मा रि ला ॥ क कि का क्क न जि तो ॥ ९० ॥ उप व णी
 क्र मु नी र ज णी ॥ स वे ची उ द या द्री व रि जाला त र णी ॥ नी सु

(10A)

२ श्रीदशमसंयोग ॥ श्रीसिद्धकुक्षुशरणकीपुस्तक
सप्ततिसी ॥ ६३ ॥

नेमसारणीततक्षणी ॥ सीधजालेसर्वहि ॥ ६१ ॥ भोगेद्रजाणी
यादवेन्द्र ॥ रथिनैसलेजैसेशशीदिनकर्यमागेगौळीयाचेभार
हसंखकेसबकदिसो ॥ ६२ ॥ जैसाबवत्रासुरावरीपुरहत ॥ युध्या
नीचैद्येवैश्रवणबंधुवधावया ॥ ६३ ॥ कीतारकासुरावरीकु
मार ॥ कीलंधकासुरावरिलपणनियतैसाचयदुकुकु
नापदिन ॥ कंसवधाचाळिल ॥ ६४ ॥ प्रतापतद्रदोद्येजणचा
लीलेराजविदिवरुण ॥ कंससंपांगतिचिचारजाठणयेत
हसंखंतुसेभेठी ॥ ६५ ॥ कंसहृणकुवल्पद्विपपाठवावा ॥ हसंखमा
गीचयेताकोडावासंदिमाजीरगडावा ॥ माझनांगपदातकी ॥ ६६ ॥
ठाईठाईसाचेथने ॥ बिदोबिदिठभेकरावे ॥ जाह्नीमुखिकचा

(11)

पुरादिक आद्य वे। रंग मंडपी बैसतो ॥ ९७ ॥ कुवल्प माहाहस्ताथो
 याहृत्स सपाठ विलासमो य। सादितकोटी लयेवु विय। गौळिभारा
 समवेत ॥ ९८ ॥ कुवल्पावरि बैसला जो देस। तेणे गजलोठीला
 जाकस्मात। गौळिजाले भयाभीत। हणती हस्तीहाना ठोपे ॥ ९९ ॥
 ह्यच्छंभणे गज आकर्षकाते। मर्वा गज काठि जाणी क्यापंथे।
 नो ह्मणे तुज गज पदाखाल ते। बालुनियां रंगडिना ॥ १०० ॥ गुरा
 रिया कपठ बळे। वणी माहादह मारीले। तैसे कुवल्प यासिन
 चले ॥ जवळी जाले मंरण तुझे ॥ १०१ ॥ तुंवां पुतना हो खुन मारि
 ली ॥ रनावर्त मारि लाजंतराकी ॥ गौवळ कुज ये स्खळि ॥ बळि
 रामा सहित मारिण ॥ २ ॥ काळिया जाणी जगसु ॥ कीरं उमा रण

(11A)

जालसी थोरा परि दुष्टा म ह सा चार ॥ जवळी जाजी पातळ ॥ ३ ॥
 वगसुर पक्षी मारी ल ॥ कैशी या तो जश्व धरि ल ॥ उँ से उँ कतां साव
 का ॥ जैसा क्षोभ ल प्रकय रुद्र ॥ ४ ॥ ह्मणे मरुप का तुं आणी गज ॥ म
 कुण प्राय दिस ति मज ॥ जो तां च क्षीण ल गता तु ज ॥ म्हु पु रि स
 धा जी ना ॥ ५ ॥ जं उ ज प्र भु पु टे न जी का ॥ तै सा दिस रि तुं की ठ का ॥
 किं म्हे गें द्रा पु टे ॥ ज वि दे खा ज ता प बाले आ प ला ॥ ६ ॥ जा न वे दा सि
 बो ले प तं ग ॥ तु ज ग्रा सी या हा गे स व ग ॥ की श्रो त्री या पु टे मां ग ॥ ज
 चार व णी ज प ला ॥ ७ ॥ वी ढी भ श्च क का ग आ गं प न्ना ॥ राज हं सा स
 दा वि शा हा न प ण ॥ की नी नी सि का सो द र्य पु णी र वि व रा सी या वि
 ना ॥ ८ ॥ की मा हा उ र गा पु टे जां ण ॥ मु श क आ ठ व का रं ण ॥ की ल व
 ला



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com